National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2016; 1(4): 15-18
© 2016 NJHSR
www.sanskritarticle.com
Received: 15-02-2016
Accepted:16-02-2016

शुभांगी आनंदराव गायकवाड,
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर (मध्य प्रदेश)

Correspondence:
शुभांगी आनंदराव गायकवाड,
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर (मध्य प्रदेश)

मृच्छकटिकम् के नायक का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन

शुभांगी आनंदराव गायकवाड

ब्रह्मा से लेकर भरतमुनि आदि जो नाट्यशास्त्रीयों की परम्परा हैं उन्होने अपनी मेधा, कल्पना और प्रतिभा के द्वारा नाट्यसाहित्य को लोकविख्यात बनाया है । आचार्य भरत के अनुसार विश्व का ऐसा कोई भी ज्ञान, विद्या, कला, योग, एवम् कर्म नहीं हैं, जिसका इस नाट्य में चित्रण न होता हैं। अतः नाटक साहित्य की सर्वोत्तम कृति हैं। **काव्येषु नाटकं रम्यम्** यह उक्ति नाटक के लिए यर्थाथ प्रतित होती हैं। । इसलिए काव्य कला का उत्कृष्ट रूप है और उसका उत्कृष्टतम् रूप है रूपक। रूपक अर्थात् नाटक। आचार्य धनञ्जय ने अपने **' दशरूपकम् '**में रूपकों के दस भेदों में नाटक को प्रमुख स्थान दिया है।

नाटकं सप्रकरणं भाण प्रहसनं डिमः ।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति ।। [1]

रूपक की आलोचना **वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः**[2] इन्हीं तीन तत्वों के आधार पर की जाती है और रुपको में परस्पर भेद माने जाते है। जिसप्रकार रुपक में कथावस्तु प्रमुख तत्व हैं उसीप्रकार सम्पूर्ण कथानक में नायक का स्थान महत्त्वपूर्ण है। नायक शब्द की व्युत्पत्ति 'ना' प्रापणे धातु से है, जिसका अर्थ - ' ले जाना ' होता है । अर्थात् वह प्रमुख रूपकीय (नाटकीय) पात्र - जो रूपक की कथा के विभिन्न सूत्रों को एकश्रृंखला में आबद्ध करके अन्तिम उद्देश्य तक ले जाये । अतः रूपक का प्रमुख पात्र नायक होता है । जिसके बिना नाटक की कल्पना नही की जा सकती हैं। आचार्य धनञ्जय ने अपने ग्रंथ दशरूपकम् के द्वितीय अध्याय में रूपक के नायक के सामान्य गुण, नायक के भेद और उसके विशेष लक्षणों का विवेचन किया है । उसी आधार पर प्रस्तुत शोधपत्र में **मृच्छकटिकम कें नायक का नाट्शास्त्रीय अध्ययन** करने का प्रयास किया जा रहा हैं। संस्कृत साहित्य में अनेक नाट्यकृतियाँ उपलब्ध हैं किन्तु **' मृच्छकटिकम् '** नाट्यकृति अपने आप में एक विलक्षण एवं प्रभावकारी नाट्यकृति है । **' मृच्छकटिकम्'** नाट्यकृति के रचयिता **आचार्य शूद्रक** है और उनकी यह रचना सर्वश्रेष्ठ सामाजिक रचना है। दशरूपकम् के आधार पर हम कह सकते हैं कि आचार्य शूद्रक रचित ' मृच्छकटिकम् ' एक प्रकरण है। जिस प्रकार प्रकरण की कथा वस्तु में लौकिक , कविकल्पित तथा श्रृंगार रस की प्रधानता होती है । इसका नायक धीरप्रशान्त लक्षण से युक्त तथा परिस्थितियों से विचलित न होकर संघर्ष करने वाला ब्राह्मण, मंत्री या वणिक् होता है । उसी प्रकार से मृच्छकटिकम् के नायक उच्च कुलोत्पन्न ब्राह्मण चारूदत्त में भी ये सभी लक्षण प्राप्त होते हैं । एक कथानक के आश्रय से रचित होने के कारण मृच्छकटिकम् एक प्रकरण है । आचार्य धनञ्जय ने अपने दशरूपकम् के द्वितीय अध्याय में नायक का सामान्य लक्षण कहा है-

नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः
रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रूढवंशः स्थिरो युवा
बुद्धयुत्साहस्मृतिप्रज्ञाकलामानसमन्वितः
शूरो दृढश्च तेजस्वी शास्त्राचक्षुश्च धार्मिकाः ।। [3]

रूपक का नायक तरूण, विनम्र, मधुरभाषी, त्यागी, चतुर एवं प्रियवादी, लोकरंजक एवं पवित्र मन वाला होना चाहिये । बातचीत में प्रवीण कुलीन वंशोत्पन्न, स्थिरमन वाला, बुद्धि उत्साह, प्रज्ञा, स्मृति, कला तथा मान से युक्त होता है । वह शूर, दृढ़, तेजस्वी, शास्त्रों का ज्ञाता तथा धार्मिक होता है ।आचार्य शूद्रक ने चारूदत्त का व्यक्तित्व इस प्रकार उपस्थित किया है कि उसके व्यक्तिमत्व से वह गुणों का राजा प्रतीत होता है । एक नायक में जो गुण पाये जाते हैं वे सभी गुण चारूदत्त में विद्यमान हैं । इसलिये चारूदत्त भारतीय नाट्यशास्त्र की दृष्टि से मृच्छकटिकम् प्रकरण का धीरप्रशान्त[4] नायक है । वह सौन्दर्य तथा प्रतिभा से युक्त दयालु, परोपकारी, सत्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ, आदर्श चरित्रयसंपन्न, क्षमाशील त्यागी आदि सभी गुणों से युक्त नायक है । उसकी प्रवृत्ति सर्वदा धर्मार्थ कामादि की ओर है । उसके जीवन का सारा क्रियाकला पविघ्नों से भरपूर है । चारूदत्त इस प्रकरण का प्रधान पात्र है । उसकी उपस्थिति से कथा आदि से अन्त तक फल प्राप्त करती है । मृच्छकटिकम् एक सुखान्त नाटक है ।चारूदत्त अपनी प्रेयसी वसन्तसेना को वधू के रूप में प्राप्त करता है, यही नाटक का फल है ।

विनीत- आचार्य शूद्रक रचित मृच्छकटिकम् का नायक चारूदत्त स्वभाव से विनम्र है । अपनी उदारता और दयालुता के कारण वह निर्धन होकर भी अपनी विनम्रता का त्याग नहीं करता। न्यायालयमें चारुदत्त की विनम्रता देखकर आधिकरणिक उसके गुणों की प्रशंसा करता है

कृत्वा समुद्रमुकोच्छ्यमात्राशेषं
दत्तानि येन हि धनान्नयपेक्षतानि ।
स श्रेयसां कथमिवैकनिधिर्महात्मा
पापं करिष्यति धनार्थमवै रिजुटम् ।। [5]

जिन्होंने रत्नाकर के समस्त रत्नों को निकाल कर उसे जलों को ढेर मात्र बना कर बिना मांगे ही याचकों का सारा धन दे डाला । समस्त कल्याणों का एकमात्र आश्रय वही महात्मा चारूदत्त धन के लिये किस प्रकार ऐसा पाप करेगा ? जिसे शत्रु भी नहीं कर सकता।

त्यागी - मृच्छकटिकम् का नायक चारूदत्त का चित्रण आचार्य शूद्रक ने त्यागमूर्ति के रूप में किया है । चारूदत्त किसी भी स्थिति में सर्वस्वत्याग करने के लिये तत्पर रहता है । चारूदत्त अपने त्यागी स्वभाव के कारण निर्धन होता है । फिर भी उसके उदारता एवं दयालुता में कमी नहीं आती है ।

सोऽस्माद्विधनां प्रणयैः कृशीकृतो
न तेन कश्चिद्विमवैविमानितः ।
निदाधकालेष्विव सादको हृदो
नृणां स तृष्णामपनीय शुष्कवान् ।। [6]

प्रस्तुत श्लोक में विट शकार से कहता है कि हम लोगों की याचना के कारण चारूदत्त निर्धन हो गये हैं, अपने धन से उन्होंने किसी को अपमानित नहीं किया । जिसने जो माँगा उसे उन्होंने वह दिया । परंतु इस समय ग्रीष्मकालीन सरोवर के भांति दूसरों की प्यास बुझा कर वे शुष्क सरोवर के समान प्रतीत हो रहे हैं ।

एकेन शून्यानि आभरणस्थानानि परामृश्य, उध्व, प्रेक्ष्य
दीर्घ निःश्वस्य, अयं प्रवारकः ममोपरि उतक्षिप्तः । [7]

जब कर्णपूरक मदमत्त हाथी को मार देता है, उसे चारूदत्त प्रसन्न होकर अंगुठी देना चाहता है परन्तु हाथ सूना होने पर दुपट्टा देता है । चारूदत्त का नाम उसके दानशीलता का द्योतक है । क्योंकि चारूदत्त का अर्थ है चारूदत्तं दानं येन असौ चारूदतः। अर्थात् जो अपना समस्त धन दुसरों को दान करता है वह चारूदत्त है । यदि संक्षेप में कहा जाय तो कह सकते हैं कि चारूदत्त का धन परोपकार के लिये है , दान के लिये है , उसके धन की पहली गति है -

दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य '। भर्तृहरि । [8]

अपने सेवकों के प्रति भी उसकी अनुकम्पा प्रशंसनीय है । चेट के द्वारा अपने स्वामी चारूदत्त के प्रति अभिव्यक्त की गई यह भावना कितनी मार्मिक है

सुजनः खलु, भृत्यानुकम्पकः स्वामी निर्धनकोऽपि शोभते ।
पिशुनः पुनर्द्रव्यगर्वितो दुष्करः खलु परिणामदारूणः । [9]

शास्त्रों का ज्ञाता- चारूदत्त शास्त्रों के अनुसार वर्तन करता था। उसका भाग्यवाद में पूर्ण विश्वास था। प्रकरण के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक वह भाग्यवादी दिखलायी पड़ता है । विधि के विधान पर उसकी अद्भूत आस्था है । उसके विचार से भाग्य के बिना संसार का एक भी कार्य सम्भव नहीं है । विदूषक से कहता है-

सत्यं न मे विभवनाशकृताऽस्ति चिन्ता
भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति ।। [10]

चारूदत्त को अपने धन समाप्त होने पर दुख नहीं होता, क्योंकि वह यह मानता है कि सब भाग्य के अनुसार होता है । भाग्य के अनुसार धन प्राप्त होता है और नष्ट भी होता है। उसे दुख इस बात का है कि निर्धनता के कारण वह दीनजनों की सहायता करने में असमर्थ है और इसी कारण मित्रगण विमुख होते जा रहे हैं ।

सत्यनिष्ठ तथा चरित्र रक्षा के प्रति सचेष्ट- चारूदत्त अपने चरित्र के प्रति हमेशा सतर्क रहा है । विभिन्न विपरीत परिस्थितियों में भी चारूदत्त के चरित्र में कहीं दोष नहीं दिखाई देता है । निर्धन होने पर भी उसे अपनी चारित्रिक प्रतिष्ठा की चिन्ता है। वसन्तसेना के गहने चोरी होने पर कहता है -

यदि तावत्कृतान्तेन प्रणयोऽर्थेषु में कृतः ।
कमिदानीं नृशंसेन चारित्रामपि दूषितम् ?।। [11]

यदि भाग्य ने मेरा धन छीन लिया तो उस निष्ठुर ने इस समय क्यों मेरे चरित्र पर भी धब्बा लगा दिया । विदुषक चारूदत्त को वसन्तसेना के साथ झूठ बोलने की सलाह देने पर वह कहता है -

भैक्ष्येणाप्यर्जयिष्यामि पुनर्भ्यासप्रतिक्रियाम् ।
अनृतं नाभिधास्यामि चारित्राभ्रंशकारणम् ।। [12]

चारूदत्त सत्यनिष्ठ है वह अपने लाभ के लिये किसी को धोखा देने की बात कभी नहीं सोचता है । उसे भीक्षावृत्ति भी स्वीकार्य है किन्तु असत्य बोलना कदापि मान्य नहीं है । असत्य बोलकर वह अपने चारित्र्य की हत्या नहीं करना चाहता है ।

शरणागतवत्सल एवं क्षमाशील - शरण में आये हुये की रक्षा करने के लिये चारूदत्त प्रसिद्ध है । अपने प्राणों को संकट में डालकर भी दूसरों की रक्षा करना उसका प्रधान गुण हैं। चारूदत्त आर्यक को विश्वास दिलाता है कि तुम मेरे शरण में आये हो मैं अपने प्राणों की आहुती देकर तुम्हारी रक्षा करुंगा तुम निश्चित रहो । चारूदत्त की शरणागत रक्षा तथा क्षमाशीलता की पराकाष्ठा तब पहुचती हैं जब वह शकार के सारे अपराध को भुलाकर उसे क्षमा करता हैं। शर्विलक जब शकार को दण्ड देने लिये कहता है तब चारूदत्त कहता है -

शत्रुः कृतापराधः शरणमुपेत्य पादयोः पतितः ।
शस्त्रेण न हन्तव्यः उपकारहतस्तु कर्तव्यः । [13]

प्रियंवद- प्रियंवद अर्थात् प्रिय बोलने वाला। मृच्छकटिकम् का नायक चारूदत्त की वाणी अत्यन्त प्रिय है । अपने वाणी के मिठास से वह दूसरों का मन जीत लेता है । चारूदत्त के मधुर भाषण से समस्त दीन लोक आश्वस्त हो जाते हैं कि हमारी याचना विफल नहीं होगी।
द्वितीय अंक में संवाहक भी चारूदत्त के प्रिय वाणी की प्रशंसा करता है ।

यस्तादृशः प्रियदर्शनः प्रियवादी दत्वा न कीत्र्तयति अपकृत विस्मरति।[14]

रक्तलोक - रक्तलोक अर्थात् लोकप्रिय। रूपक का नायक लोकप्रिय होना चाहिये । इस धनञ्जय के कथन के अनुसार चारूदत्त भी लोकप्रिय नायक है । चारूदत्त की लोकप्रियता का वर्णन करते हुये चंदनक कहता हैं-

सर्वः खलु भवति लोके लोकः सुखसंस्थिताना चिन्तायुक्तः ।
विनिपतितानां नराणां प्रियकारी दुर्लभो भवति ।। [15]

चारूदत्त ,दया, क्षमा आदि गुणरूपी रत्नों के विधान है, सज्जनों को दुःखरूपी समुद्र पार करने के लिये पुल के समान है । इस संसार में सभी आदमी सुखी व्यक्तियों के ही हितचिन्तक होते हैं किन्तु आपत्ति में पड़े लोगों का हित करने वाला कोई दुर्लभ होता है ।

धर्मनिष्ठ- रूपक का नायक धर्मनिष्ठ होना चाहिये । इसके अनुसार चारूदत्त धर्मनिष्ठ व्यक्ति है । वह नैतिक कर्म, पूजा-पाठ में विश्वास रखत है । तप, मन, वाणी और कर्म से वह सर्वथा देवताओं का भक्त है । उसका विचार है कि भलीभांति अर्चना करने पर देवतागण अवश्य ही प्रसन्न होते हैं।एक गृहस्थ की विधियों को श्रद्धा के साथ सम्पन्न करना अपना प्रथम कर्तव्य मानता है । उसका कथन है कि -

वयस्क ! मा मैवम्, गृहस्थस्य नित्योऽयं विधिः
तपसा मनसा वाग्भिः पूजिता बलिकर्मभिः ।
तुष्यन्ति शमिनां नित्यं देवताः किं विचरितैः ।। [16]

पुत्रवत्सल -मृच्छकटिकम् प्रकरण के नायक में पुत्रवत्सल नामक विशेष गुण है । चारूदत्त अपने पुत्र रोहसेन को बहुत अधिक प्यार करता है । वह विदूषक से कहता है कि मेरे समान मेरे पुत्र को भी स्नेह दो क्योंकि मृत्यु व्यक्ति का लोक में पुत्र प्रतिकृति है ।चारूदत्त अपने पुत्र से गले मिल कर कहता है -

इदं तत् स्नेहसर्वस्वं सममाढयदरिद्रयोः
अचन्दनमनौशीरं हृदस्यानुलेपनम् । [17]

यह (पुत्र) धनी और निर्धन दोनों के लिये एक समान स्नेह का पात्र होता हो यह पिता पुत्र का जग प्रसिद्ध सर्वस्व है । (अर्थात् पुत्र पिता का प्राण होता है) यह बिना चन्दन और खस के भी हृदय का शान्तीकारक लेप है । अर्थात् पुत्र को देखकर ही पिता के हृदय को शीतलता प्राप्त होती है । मृत्युदण्ड के समय भी वह अपने पुत्र को निर्देश देता है कि जल्दी से सकुशल घर लौट जाओ और माँ के साथ आज ही आश्रम चले जाओ ।

दक्षिण नायक - आचार्य धनञ्जय ने अपने दशरूपकम् में जो दक्षिण नायक के लक्षण प्रस्तुत किये है वह सब लक्षण मृच्छकटिकम् के नायक चारूदत्त में प्राप्त होते हैं । दक्षिण का अर्थ होता है 'सरल तथा उदार 'किसी दूसरी नायिका से प्रेम हो जाने पर भी नायक ज्येष्ठा नायिका के प्रति उदार रहता है, अर्थात् पहिली के प्रति गौरव, भय, प्रेम और दाक्षिण्य का परित्याग नहीं करता है । उसक व्यवहार में कहीं भी विकृति नहीं आती है । गणिका वसन्तसेना से प्रेम करने पर भी चारूदत्त अपनी पत्नी धूता से प्रेम करता है एवं उसको महत्त्व देता है। चारूदत्त दूसरी नायिका (वसन्तसेना) के द्वारा आकर्षित होकर भी अपनी ज्येष्ठा नायिका धूता को उतना ही प्रेम और महत्त्व प्रदान करता है, उसका आदर करता है, जितना वसन्तसेना का करता है और अग्नि प्रवेश से धूता को परावृत्त करता है ।

हा प्रेयसि ! प्रेयसि विद्यमाने
कोऽयं कठोरो व्यवसाय आसीत् ।
अम्भोजिनी लोचन मुद्रणं किं
भानावस्तंगमिते करोति ?।। [18]

इस प्रकार आचार्य धनञ्जय अपने दशरूपकम् में नायक के सामान्य लक्षण, भेदों का जो वर्णन किया है, उसके अनुसार मृच्छकटिकम् का नायक चारूदत्त में सर्व विनयदि जो सामान्य गुण प्राप्त होते है। चारूदत्त के गुणों का वर्णन संक्षेप में किया जा सकता है -

दीनानां कल्पवृक्षः स्वगुणफलनतः सज्जनानां कुटुम्बी
आदर्शः शिक्षितानां सुचरितनिकषः शीतवेलासमुद्रः ।
सत्कर्ता नावमन्ता पुरूषगुणनिधिर्दक्षिणोदारसत्वो
ह्येकः श्लाघ्यः स जीवत्यधिकगुणतया चोच्छवसन्तीव चान्ये ।।[19]

आचार्य शूद्रक ने अपने मृच्छकटिकम् के नायक चारूदत्त को आदर्श एवं यथार्थ नायक के रूप में प्रस्तुत किया है । वह धीरप्रशान्त, सामान्य गुणों से युक्त आधुनिक नायक है । अपने आधुनिक विचारों के कारण वसन्तसेना के गणिका होते हुये भी उसे कुलवधू के रूप में स्वीकार करता है । क्योंकि वह वसन्तसेना के कर्म को गौण मानकर उसके व्यक्तित्व को प्राथमिकता देता है । इस प्रकार वह उसमें एक गृहिणी के गुणों का अवलोकन करता है ।यह क्रान्तिकारी कदम प्रचलित परम्परा को तोड़कर एक नविन आधुनिक विचारों से युक्त नायक को चित्रित करने के शूद्रक के प्रयोजन को पूर्णतया सिद्ध करता है । प्राचीन काल में समाज़ जिन चार वर्णों में बंदिस्त था तब वर्णों में शिथिलता दिखाकर एक नविन सामाजिक,आधुनिक विचारों से प्रेरित नायक को समुपस्थित करके समाज़ में एक नया आधुनिक विचार करने की प्रेरणा प्रदान करता है।

सन्दर्भः-

1) दशरुपकम् 1/8
2) दशरुपकम् 1/1
3) **सामान्यगुर्णेभूर्यान् द्विजादिको धीरप्रशान्तः स्यात् ।** साहित्यदर्पण 3/14
4) दशरुपकम् 2/2
5) मृच्छकटिकम(रमाशंकर त्रिपाठी) 5/5
6) मृच्छकटिकम् 3/23
7) मृच्छकटिकम् पृ.क्र.175
8) भर्तुहरी नितिशतकम्
9) मृच्छकटिकम् 3/1
10) मृच्छकटिकम् 1/13
11) मृच्छकटिकम् 3/25
12) मृच्छकटिकम् 3/26
13) मृच्छकटिकम्10/55
14) मृच्छकटिकम् पृ.क्र.157
15) मृच्छकटिकम् 10/15
16) मृच्छकटिकम् 1/16
17) मृच्छकटिकम् 10/23
18) मृच्छकटिकम् 10/58
19) मृच्छकटिकम् 1/48